बाहरी एवं भीतरी पवित्रता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पवित्रता, शुद्धता, स्वच्छता मानव जीवन को ऊँचा उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण सद्‌गुण है। अनेक लोग स्वच्छता अथवा सफाई का अर्थ केवल ऊपर की टीपटाप, आकर्षक सिंगार या बढ़िया फैशन को समझते है। कुछ लोगों की दृष्टि में सुन्दर वस्त्र, आभूषण, प्रसाधन सामग्री का उपयोग करना सफाई और सौन्दर्य का प्रमाण समझा जाता है। कुछ लोग ऐसे भी जो शरीर और वस्तुओं की अधिक सफाई सौन्दर्य की वृद्धि आदि बातों को सांसारिक प्रपंच मानकर इनकी उपेक्षा करने में ही सफलता का अनुभव करते है। पर ये सभी दृष्टिकोण एकांकी है। कुछ लोग विलास प्रियता का श्रृंगार के भाव से ही स्वच्छता और सफाई करते है। ये भी संभव है कि कुछ लोग अपना वैभव न प्रकट करने के दृष्टिकोण से सफाई पर ध्यान देते है। इससे स्वच्छता की प्रवृत्ति को अनावश्यक या अनुकरणीय नहीं माना जा सकता। वास्तव में स्वच्छता एवं पवित्रता एक ही उच्च मनोवृत्ति के रूप है और दोनों का स्वरूप मन प्रसन्न तथा आत्मा को शांत करने में इनका बड़ा योग रहता है। बाह्य स्वच्छता और पवित्रता से अन्तःकरण की पवित्रता की भी वृद्धि होती है। मन में अशुद्ध भावों का उदय होना स्वयं ही कम हो जाता है। पवित्रता और स्वच्छता से मनुष्य की श्रेष्ठता और सुखी होने का परिचय मिल जाता है। हमारे देश में ऐसे संत पाये जाते है जो सब तरह से बुरा काम करने में ही आध्यात्मिकता समझते है। सर्वसाधारण भी उनको परम आत्म ज्ञानी समझकर पूजनीय मान लेता है। पर यह उनका भ्रम या अज्ञान ही है। मनुष्य के विकास और आध्यात्मिकता का प्रमाण केवल ज्ञान और भक्ति की बाते करने से नहीं मिल सकता। मनुष्य जो कुछ कहता है। उसका प्रमाण उसके व्यावहारिक जीवन में ही मिल सकता है। संसार के लोग सुदरता के बड़े प्रेमी बनते है। क्या साधारण ग्रामीण और क्या नगर निवासी रईस सभी सुंदरता के प्रशंसक और चाहने वाले होते है। पर उनकी सुन्दरता की रूचि या कसौटी पृथक–पृथक होती है। एक बात तो सबको माननी पड़ती है कि सुन्दरता में स्वच्छता और निर्मलता का समावेश अवश्य होना चाहिए। संसार में सभी सुन्दरता चाहते है परन्तु वास्तविक सौन्दर्य का ज्ञान तो किसी–किसी बुद्धिमान

विवेकी मानव को ही होता है। जो मलयुक्त है, दोषयुक्त है, वही असुंदर है। दोष के संघ से सुन्दर भी असुंदर बन जाता है और गुण के संघ से असुंदर भी सुंदर लगने लगता है। जिस प्रकार सुन्दर वस्त्रों के संघ से शरीर सुन्दर प्रतीत होने लगता है और सुन्दर शरीर पर वस्त्राभूषण भी सजने लगते है, उसी प्रकार सुन्दर मधुर शब्दों से वाणी सुन्दर होती है, सुन्दर भावों से मन सुन्दर बन जाता है, सुन्दर विचारों से बुद्धि सुन्दर हो जाती है और अनन्त सौन्दर्य निधि आत्मा–परमात्मा के संघ से जीवात्मा सुन्दर हो जाता है। वास्तविक सुन्दरता वही है जिससे मनुष्य का जीवन ही ऐसा सुन्दर बन जाये कि सब लोग उसकी तरफ आकर्षित हो जाये। ऐसी सुन्दरता तभी प्राप्त हो सकती है जब हमारा शरीर, मन, चरित्र, आत्मविचार आदि सबकुछ निर्मल और पवित्र हो। शारीरिक स्वच्छता और पवित्रता के बिना स्वास्थ्य का ठीक रह सकना सम्भव नहीं। जिस व्यक्ति का स्वास्थ्य गिरा हुआ रहेगा वह व्यक्ति किसी भी सांसारिक कार्य में अच्छी सफलता नहीं प्राप्त कर सकेगा। संसार में सच्चे साथी, मित्र, हितैषी सद्व्यवहार द्वारा ही मिल सकते है। स्वार्थी अथवा कपटी स्वभाव के मनुष्यों को कभी सच्चे मित्र नहीं मिल सकते। चरित्र की पवित्रता से ही मनुष्य समाज में विश्वनीय बनता है। ऐसे आदमी का सभी लोग सम्मान करते है। जिसके चरित्र के दूसरे व्यक्तियों को संदेह हो वह सबकी निगाह से गिर जाता है और कभी सच्ची प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त कर सकता। जिस प्रकार मनुष्य का अस्तित्व अन्योन्याश्रित है उसी प्रकार जीवन के विभिन्न अंग भी एक दूसरे से संबंधित है। किसी एक विषय में उन्नति कर लेने से मानव जीवन कभी सफल नहीं माना जा सकता। यदि केवल बाहरी सुन्दरता और रूप रंग को ही महत्व माना जाये तो यह ठीक नहीं। जहां पर बाहरी और भीतरी दोनों प्रकार की सुन्दरता रहती है वहां सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। बाह्य सुन्दरता से व्यक्तित्व आकर्षक बनता है और आन्तरिक सुन्दरता से वाणी में ओज् आता है। आन्तरिक सुन्दरता का संबंध आत्मिक सुन्दरता से है। यद्यपि आत्मा के स्तर पर न तो कोई सुन्दरता है और न कोई असुन्दरता। फिर भी विचार की दृष्टि से वहीं आदमी सुन्दर होता है जो ज्ञानी हो। ज्ञान आत्मा का आन्तरिक गुण है। ज्ञान के द्वारा अन्तःकरण के अंधकार को नष्ट करके आत्मा को प्रकाशित किया जाता है। बाहर का अंधकार सूर्य के प्रकाश से दूर हो जाता है। किन्तु अन्दर की मलिनता को दूर करने के लिए ज्ञान रूपी प्रकाश की

आवश्यकता पड़ती है। अन्दर का अंधकार इतना सघन होता है कि उसके व्याप्त रहने से मानव को सत्य का स्वरूप दिखलायी ही नहीं पड़ता। जिसका परिणाम यह होता है कि मानव क्रोध, मान, माया, लोभ के जाल में फंसकर अपने जीवन को नष्ट कर देता है। अतः पवित्रता वहीं ठीक है जो बाह्य और अन्तर दोनों को निर्मल कर दे। भारत में यह मान्यता है कि गंगा में स्नान करने से जितने भी पाप होते है वह सब कट जाते है। इसी बात को दृष्टि में रखकर के लोग स्नान करते है और मन्त्रोचारण के द्वारा आंतरिक और बाह्य शुद्धि करते है। मंत्रों में बहुत शक्ति होती है। क्योंकि मंत्रों के शब्द अन्तःकरण से निकलते है। इस प्रकार सर्वांगपूर्ण और सुन्दर जीवन की प्राप्ति तभी हो सकती है जब मानव की आत्मा निर्मल हो।